• बाल कविता...

## जीवन की सीख

बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ
पाठ पढ़ावे जब शिक्षक तो
खूब लगन से ध्यान लगाओ।
बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ।
घर से जब विद्यालय चलते
कहीं अलग मत पांव बढ़ाओ
करो नहीं तुम उच्छृंखालता
बस पढ़ना है, साध बनाओ
बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ।
जो बच्चे सज्जन हैं होते
झूठ कभी वह नहीं बोलते
सच पर कायम अडिग चाह से
अपनी सीढ़ी आप बनाओ।
बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ।
वह दिन तुमसे दूर नहीं
जब लोग तुझे विद्वान कहेंगें
यही साधना की बेला है
खूब जतन से ज्ञान बढ़ाओ।
बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ।
गुरु की वाणी अमृत होती
इसे गृहण तुम करते रहना
शिष्टाचार सभी से करते
आदर के तुम भाव जगाओ।
बच्चों जब कक्षा में जाओ
मन से पढ़ कर पाठ बनाओ।

■ नंदेश निर्मल

• चुटकुले...

**बंता– कल मेरी बीवी ने 7 हजार की साड़ी खरीद ली थी।**
**संता– अच्छा आज इतना खुश क्यों है, उसने साड़ी वापिस कर दी क्या?**
**बंता– नहीं यार मेरी पत्नी वही साड़ी पहनकर तेरी पत्नी से मिलने आ रही है।**

**किट्टू– अगर कोई गलती हो जाए तो पता है क्या करना चाहिए?**
**पिंटू– क्या...?**
**किट्टू– शांति से बैठकर सोचना चाहिए कि नाम किसका लगाना है...**

**टीचर गोलू से– पांच में से पांच घटाने पर कितने बचेंगे?**
**गोलू पता नहीं मैडम**
**टीचर– अगर तेरे पास 5 भुट्टे है, और में 5 भुट्टे तुझसे मै ले लूं तो तेरे पास क्या बचेगा?**
**गोलू– छोले।**

• जानकारी...

## सोता है दिमाग का एक हिस्सा...

इंसान के शरीर का अहम हिस्सा दिमाग होता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इंसानी दिमाग कितने देर तक एक्टिव रहता है और ये कैसे काम करता है। आज हम आपको बताएंगे कि आखिर कैसे दिमाग का अलग-अलग हिस्सा काम करता है और सोने पर कौन सा हिस्सा सक्रिय रहता है।

दिमाग इंसान के शरीर का अहम हिस्सा है। अमेरिका में हुए एक शोध में चौंकाने रिजल्ट सामने आया है। इस शोध में सामने आया कि जब हम जाग रहे होते हैं, तब हमारे दिमाग का एक छोटा हिस्सा झपकी लेता है। लेकिन यही हिस्सा जब हम सो रहे होते हैं, तब बार-बार जागता रहता है। वैज्ञानिकों ने इस नई खोज को बेहद अहम बताया है, जो कई बीमारियों को समझने में मदद कर सकती है।

रिसर्च में सामने आया है कि दिमाग के एक बेहद छोटे हिस्से में मस्तिष्क तरंगें अचानक से कुछ मिली सेकंड के लिए बंद हो जाती हैं। वहीं ये हमारे सोने के दौरान इसी क्षेत्र में अचानक से मस्तिष्क तरंगें चलने लगती हैं। इतना ही नहीं मस्तिष्क तरंगों से ही दिमाग के सोने-जागने का पता चलता है। 4 साल चले शोध में वैज्ञानिकों ने चूहों के दिमाग के 10 अलग-अलग हिस्सों में मस्तिष्क तरंगों का वोल्टेज मापा और बड़ी मात्रा में इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी डाटा इकट्ठा किया था।

शोधकर्ताओं ने कई महीनों तक एक छोटे समूह की गतिविधियों पर माइक्रो सेकंड की सीमा तक नजर रखा था। इस डाटा का एक आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क के जरिए विश्लेषण किया गया था और नेटवर्क से ऐसे पैटर्न और विसंगतियां पता करने को कहा गया, जो मानवीय अध्ययनों में पकड़ में नहीं आई हैं।

जैवआणविक इंजीनियरिंग के प्रोफेसर डेविड हॉसलर ने कहा कि वैज्ञानिक के तौर पर हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि हमारे दिमाग के अलग-अलग हिस्से उस समय झपकी ले रहे होते हैं, जब हमारा बाकी दिमाग जगा होता है। यह नई खोज नींद अनियंत्रित होने से जुड़ी न्यूरोडेवलपमेंटल और न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारियों को बेहतर समझने और इनका इलाज खोजने में बेहद अहम हो सकती है।

वहीं वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में जीव विज्ञान के सहायक प्रोफेसर कीथ हेनगेन ने कहा कि सोना-जागना हमारे व्यवहार के सबसे बड़े निर्धारक हैं. इसलिए अगर हमें यह नहीं पता कि सोना-जागना वास्तव में क्या हैं, तो हम पिछड़ जाएंगे. सोने-जागने को हम बुनियादी तौर पर जितना अधिक समझेंगे, उतना ज्यादा हम बीमारियों का समाधान कर पाएंगे।

• पंचतंत्र की कहानी

## ब्राह्मणी और तिल के बीज

**ब्राह्मण–'कल सुबह कर्क–संक्रान्ति है, भिक्षा के लिये मैं दूसरे गाँव जाऊँगा। वहाँ एक ब्राह्मण सूर्यदेव की तृप्ति के लिए कुछ दान करना चाहता है।' पत्नी–'तुझे तो भोजन योग्य अन्न कमाना भी नहीं आता। तेरी पत्नी होकर मैंने कभी सुख नहीं भोगा।'**

**ब्राह्मण–'देवी! तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। अपनी इच्छा के अनुरूप धन किसी को नहीं मिलता। पेट भरने योग्य अन्न तो मैं भी ले ही आता हूँ। अधिक की तृष्णा का त्याग कर दो। अति तृष्णा के चक्कर में मनुष्य के माथे पर शिखा हो जाती है।'**

एक बार की बात है एक निर्धन ब्राह्मण परिवार रहता था, एक समय उनके यहाँ कुछ अतिथि आये, घर में खाने पीने का सारा सामान खत्म हो चुका था, इसी बात को लेकर ब्राह्मण और ब्राह्मण-पत्नी में यह बातचीत हो रही थी-

ब्राह्मण-'कल सुबह कर्क-संक्रान्ति है, भिक्षा के लिये मैं दूसरे गाँव जाऊँगा। वहाँ एक ब्राह्मण सूर्यदेव की तृप्ति के लिए कुछ दान करना चाहता है।' पत्नी-'तुझे तो भोजन योग्य अन्न कमाना भी नहीं आता। तेरी पत्नी होकर मैंने कभी सुख नहीं भोगा।'

ब्राह्मण-'देवी! तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। अपनी इच्छा के अनुरूप धन किसी को नहीं मिलता। पेट भरने योग्य अन्न तो मैं भी ले ही आता हूँ। अधिक की तृष्णा का त्याग कर दो। अति तृष्णा के चक्कर में मनुष्य के माथे पर शिखा हो जाती है।'

ब्राह्मणी ने पूछा-'यह कैसे?'

तब ब्राह्मण ने सूअर-शिकारी और गीदड़ की यह कथा सुनाई-

एक दिन एक शिकारी शिकार की खोज में जंगल की ओर गया। जाते-जाते उसे वन में बड़ा सूअर दिखाई दिया। उसे देखकर उसने अपने धनुष की प्रत्यंचा को कानों तक खींचकर निशाना मारा। निशाना ठीक स्थान पर लगा। सूअर घायल होकर शिकारी की ओर दौड़ा। शिकारी भी तीखे दाँतों वाले सूअर के हमले से गिरकर घायल हो गया।शिकारी और शिकार दोनों का अन्त हो गया।

इस बीच एक भटकता और भूख से तड़पता गीदड़ वहाँ आ निकला। वहाँ सूअर और शिकारी, दोनों को मरा देखकर वह सोचने लगा, 'आज दैववश बड़ा अच्छा भोजन मिला है। इसे पूर्वजन्मों का फल ही कहना चाहिए।'

यह सोचकर वह मृत लाशों के पास जाकर पहले छोटी चीजें खाने लगा। उसे याद आ गया कि अपने धन का उपयोग मनुष्य को धीरे-धीरे ही करना चाहिये; इसका प्रयोग रसायन के प्रयोग की तरह करना उचित है। इस तरह अल्प से अल्प धन भी बहुत काल तक काम देता है।

यह सोचकर उसने निश्चय किया कि वह पहले धनुष की डोरी को खायेगा। उस समय धनुष की प्रत्यंचा चढ़ी हुई थी; उसकी डोरी कमान के दोनों सिरों पर कसकर बँधी हुई थी। गीदड़ ने डोरी को मुख में लेकर चबाया। चबाते ही वह डोरी बहुत वेग से टूट गई; और धनुष के कोने का एक सिरा उसके माथे को भेद कर ऊपर निकला आया, मानो माथे पर शिखा निकल आई हो। इस प्रकार घायल होकर वह गीदड़ भी वहीं मर गया।

ब्राह्मण ने कहा-'इसीलिये मैं कहता हूँ कि अतिशय लोभ से माथे पर शिखा हो जाती है।'

ब्राह्मणी ने ब्राह्मण की यह कहानी सुनने के बाद कहा-'यदि यही बात है तो मेरे घर में थोड़े से तिल पड़े हैं। उनका शोधन करके कूट छाँटकर अतिथि को खिला देती हूँ।'

ब्राह्मण उसकी बात से सन्तुष्ट होकर भिक्षा के लिये दूसरे गाँव की ओर चल दिया। ब्राह्मणी ने भी अपने वचनानुसार घर में पड़े तिलों को छाँटना शुरू कर दिया। जब उसने तिलों को सुखाने के लिये धूप में फैलाया तो एक कुत्ते ने उन तिलों को मूत्र-विष्ठा से खराब कर दिया। ब्राह्मणी बड़ी चिन्ता में पड़ गई। यही तिल थे, जिन्हें पकाकर उसने अतिथि को भोजन देना था। बहुत विचार के बाद उसने सोचा कि अगर वह इन शोधित तिलों के बदले अशोधित तिल माँगेगी तो कोई भी दे देगा। यह सोचकर वह उन तिलों को छाज में रखकर घर-घर घूमने लगी और कहने लगी-'कोई इन छँटे हुए तिलों के स्थान पर बिना छँटे तिल दे दे।'

अचानक यह हुआ कि ब्राह्मणी तिलों को बेचने एक घर में पहुँच गई, और कहने लगी कि-'बिना छँटे हुए तिलों के स्थान पर छँटे हुए तिलों को ले लो।' उस घर की गृह पत्नी जब यह सौदा करने जा रही थी तब उसके लड़के ने, जो अर्थशास्त्र पढ़ा हुआ था, कहा-

'माता! इन तिलों को मत लो। कौन पागल होगा जो बिना छँटे तिलों को लेकर छँटे हुए तिल देगा। यह बात निष्कारण नहीं हो सकती। अवश्यमेव इन छँटे तिलों में कोई दोष होगा।'

पुत्र के कहने से माता ने यह सौदा नहीं किया।

• रोचक...

## 10 लाख का नोट

*भारत में पिछले साल 2000 रुपये के नोट को सर्कुलेशन से बाहर कर दिया गया। ऐसे में क्या आप एक ऐसे देश के बारे में जानते हैं जहां 200-300 या फिर 1000 के अलावा 10 लाख रुपये तक का नोट मिलता है। जी हां, आप सही पढ़ रहे हैं। एक देश ऐसा भी है जहां 10 लाख रुपये का एक नोट भी होता है। दरअसल हम वेनेजुएला की बात कर रहे हैं। यहां सबसे ज्यादा वैल्यूएबल नोट 10 लाख रुपये का है। यहां सरकार ने अक्टूबर 2021 में एक लाख बोलिवर का नोट छापा था। इसके बाद वेनेजुएला अपने इस काम के बाद बसे बड़ी करेंसी नोट छापने वाला दुनिया का पहला देश बन गया था। बता दें ये करेंसी भारतीय रुपयों में 3,156,572,917 होती है।*

• पेट्रोल की कीमतें ...

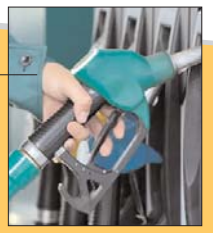

*दुनियाभर के अलग-अलग देशों में पेट्रोल की कीमतें अलग-अलग होती हैं। भारत में पेट्रोल की कीमतों में अक्सर बदलाव होते रहते हैं। ये बदलाव बाहर से तेल की खरीद पर भी निर्भर करते हैं और टैक्स पर भी। ऐसे में क्या आप जानते हैं कि अमेरिका में पेट्रोल की कीमत क्या है। अमेरिका में वर्तमान समय में एक लीटर पेट्रोल 0.96 डॉलर में मिलता है। यदि भारतीय रुपयो में देखें तो यही पेट्रोल 80 रुपये प्रति लीटर होता है।*